# 12 यक्ष-युधिष्ठिर संवादः

यह पाठ महाभारतकाल की एक घटना पर आधारित है। जब पाण्डव वन में घूम रहे थे तभी उन्हें प्यास लगी। युधिष्ठिर ने नकुल को एक सुन्दर सरोवर से पानी लाने के लिए भेजा। नकुल ने ज्योंहि पानी पीना चाहा त्योंही एक आवाज आयी ''पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो, बाद में पानी पीना' उसके न सुनने पर वह वहीं मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। क्रमशः सहदेव, अर्जुन और भीम की भी यही दशा हुई। युधिष्ठिर के वहां पहुंचने पर आकाशवाणी हुई 'मैं यक्ष हूं, पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर देना, अन्यथा तुम्हारी भी यही दशा होगी। युधिष्ठिर ने यक्ष के सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी कुशलता से दिये। उन्हीं में से कुछ प्रश्न और उत्तर यहां विशेष रूप से जीवनमूल्य एवं मानवीय संवेदनाओं की अनुभूति की दृष्टि से दिए गए हैं, उन्हें पढ़िये और समझिए।

**1.** (i) भूमेः गुरुतरं किंस्वित्?, (ii) खात् च उच्चतरं किंस्वित्?, (iii) वायोः शीघ्रतरं किंस्वित्?, (iv) तृणात् बहुतरं किंस्वित्?

**2.** माता (जन्मदात्री) मातृदेवो भव, पिता (पालक/संस्कारदाता) पितृदेवो भव, मनः (चञ्चलम्)।, चिन्ता (कदापि समाप्ता न भवति)

विशेषः (i) तुलनायां/एकस्मात् अधिकम् इत्यर्थे 'तरप्' प्रत्ययः भवति। गुरुतरः/गुरुतरा, गुरुतरम् (अधिक बड़ा) त्रिषु लिङ्गेषु। (ii) जिससे तुलना या अधिकता बताई जाए, उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा– भूमेः, खात्, वायोः, तृणात्

**3.** (i) प्रवसतः मित्रं किंस्वित्? परदेश में रहते हुए का कौन मित्र है? (ii) गृहे सतः मित्रं किंस्वित्? घर में रहते हुए का कौन मित्र है? (iii) आतुरस्य च मित्रं किम्? रोगी का मित्र कौन है? (iv) मरिष्यतः मित्रं किंस्वित्? मरने वाले का मित्र कौन है?

**4.** (i) सार्थः=मित्र दल, झुंड (काफिला) अर्थात् परदेश की यात्रा अकेले नहीं करनी चाहिए। कष्ट होता है, विश्वास नहीं होता, धोखा हो सकता है। (ii) भार्या (पत्नी), (iii) वैद्य, चिकित्सक, वही व्यक्ति को स्वस्थ कर सकता है। (iv) दानम् (योग्य पात्र को दान देना कल्याण कारक होता है) दूसरे का उपकार करना ही जीवन का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

प्रवसतः=घर या देश से बाहर रहते हुए का (प्र+वस्+शतृ, षष्ठी एकवचनम्) किंस्वित् = कौन सी चीज, सतः=रहते हुए का

**5. यक्षस्य प्रश्नाः**

| | | |
|---|---|---|
| (i) | (नरः) किम् नु हित्वा प्रियः भवति? | मनुष्य किसे छोड़कर प्रिय होता है? |
| (ii) | किम् नु हित्वा न शोचति? | किसे छोड़कर फिर शोक नहीं करता? |
| (iii) | किम् नु हित्वा अर्थवान् भवति? | किसे छोड़कर वह धनवान् हो जाता है? |
| (iv) | किम् नु हित्वा सुखी भवेत्? | किसे छोड़कर वह सुखी हो जाता है? |

**6.** (i) मानम् (अभिमान का त्याग करने से वह सर्वप्रिय हो जाता है। क्योंकि अभिमान/गर्व मानव को गिरा देता है।

(ii) क्रोधम् (क्रोधः अनर्थकरः भवति)

(iii) कामना (इच्छाएं)

(iv) लोभम् (लालच गीता में काम, क्रोध, लोभ को नरक का द्वार कहा जाता है। त्रिविधं नरकस्येदं द्वारम्....। कामः क्रोधः तथा लोभः ..... इसलिए इनका त्याग करना उचित है।

हित्वा=हा+क्त्वा=छोड़कर, शोचति=शोक करता है। (शुच्+लट्), अर्थवान्=(अर्थ+मतुप्)=धनवान्

**7.** (i) तपः लक्षणं किम्? (ii) दमः कः प्रकीर्तितः?

(iii) परा क्षमा च का प्रोक्ता? (iv) ह्रीः च का परिकीर्तिता?

**8.** (i) अपने धर्म/कर्त्तव्य का पालन करना तप है।

(ii) मन को वश में करना दम है।

(iii) सुख-दुःख, मान-अपमान, लाभ-हानि आदि द्वन्द्वों को सहन करना या उनमें समभाव रखना क्षमा है।

(iv) अनुचित या अकार्य न करना ही लज्जा है। ह्रीः+अकार्यनिवर्तनम्

**9.** (i) पुंसाम् दुर्जयः शत्रुः कः पुरुषों का दुर्जयः (जिसको जीतना अत्यंत कठिन हो) शत्रु कौन है?

(ii) (पुंसाम्) अनन्तकः व्याधिः कः? कभी न समाप्त होने वाली मनुष्यों की व्याधि क्या है?

(iii) सज्जनः कीदृशः स्मृतः? सज्जन कैसा कहा गया है?

(iv) असाधुः च कीदृशः स्मृतः? और असज्जन कैसा माना गया है?

पुंसाम् पुंस्+षष्ठी बहु.व., व्याधिः+अनन्तकः, साधुः+असाधु, कश्च=कः+च, कीदृशश्च=कीदृश+ःच

स्मृ+क्तः=कहा गया है, याद किया गया है।

**10.** (i) क्रोधः जो बहुत कठिनाई से जीते जाने वाला शत्रु है। (ii) लोभः ऐसी बीमारी है जो जीवन में कभी समाप्त ही नहीं होती। कोई न कोई लोभ बना ही रहता है। (iii) सर्वभूतहितः जो तन, मन, धन से सभी प्राणियों की भलाई में लगा रहता है, वह साधु=सज्जन है। (iv) निर्दयः जिसके मन में दूसरे के प्रति दया का भाव नहीं होता वह अत्यंत कठोर/निर्दयी व्यक्ति 'असाधु' या असज्जन कहा गया है।

सुदुर्जयः=सु+दुर्+जयः बहुत ही दुखपूर्वक जिसको जीतने की सम्भावना न हो।

व्याधिः+अनन्तकः जिसका अन्त न हो अर्थात्, एक समाप्त हो फिर दूसरी प्रारम्भ हो जाए।

सर्वभूतहितः सर्वेषां भूतानां (प्राणिनां) हितं यस्य सः

## प्रश्नाः

**1. वाक्येषु रिक्तस्थानानि पूरयत।**

(i) तृणात् बहुतरी ------।

(ii) ------- मित्रं गृहे सतः।

(iii) ------- हित्वा सुखी भवेत्।

(iv) मनसः ------- दमः।

(v) अनन्तकः व्याधिः --------।

**2. अधोलिखितपदेषु मूलशब्दं विभक्तिं च निर्दिशत।**

**यथा**– किंस्विद् गुरुतरं <u>भूमेः</u>। भूमिशब्दः, पञ्चमी विभक्तिः एकवचनम्

(i) मनः शीघ्रतरं <u>वातात्</u>।

(ii) सार्थः <u>प्रवसतः</u> मित्रम्।

(iii) <u>पुंसां</u> कः सुदुर्जयः शत्रुः।

(iv) <u>मानं</u> हित्वा प्रियः भवति।

**3. प्रकृति-प्रत्यययोगेन पदनिर्माणं कृत्वा रिक्तस्थानं पूरयत।**

(i) माता (गुरु+तरप्) ------- भूमेः।

(ii) क्रोधं (हा+क्त्वा) न शोचति।

(iii) <u>अर्थ+मतुप्</u> ------ कः भवति?

(iv) साधुः कः (स्मृ+क्त) -------?

(v) नरः किम् नु हित्वा (सुख+इनि) ----- भवेत्?